Aims of Inclusive Education
समावेशी शिक्षा के उद्देश्य

(1) अक्षमता युक्त बच्चों के लिए शैक्षिक वातावरण प्रदान करना

(2) बच्चों में निहित प्रतिभाओं का विकास

(3) सीखने की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली बाधाओं का निराकरण

(4) पाठ्यक्रम में सुधार

(5) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास

(6) शिक्षकों को प्रशिक्षित करना

(7) मूल्यांकन पर ध्यान (मूल्यांकन प्रक्रिया सकारात्मक एवं निरंतरपूर्ण)

(8) रुचिपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास

(9) अक्षमता की पहचान करके शिक्षा की व्यवस्था (0-6 वर्ष)

(10) 6-14 वर्ष के बच्चों का सर्वांगीण विकास (विशेष उपकरणों की व्यवस्था करके अधिगम स्तर को उच्च करके)

(11) 14-21 वर्ष के बच्चों को उचित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराना।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व
(Need And Importance of Inclusive Education)

1. सामुदायिक सहयोग के लिए

2. छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च करने एवं सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए।

3. शिक्षकों को बहुआयामी शिक्षण कला में निपुण बनाने के लिए

4. समावेशी शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं शैक्षिक नीतियों का निर्धारण करने वालों के मध्य समन्वय

5. सामाजिक कौशलों का विकास

6. बच्चों में सामाजिक गुण एवं सामाजिक समरसता का विकास सम्भव (सामाजिक एकता)

7. विद्यालयी व्यवस्था को सामाजिक आकांक्षा के अनुरूप बनाया जाता है।

8. बच्चों की छिपी हुई प्रतिभा का विकास

9. सर्वांगीण विकास में योगदान

10. राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका

समावेशी शिक्षा की आवश्यकताएँ (NEEDS OF INCLUSIVE EDUCATION)

कुछ शिक्षाविद् विशिष्ट शिक्षा के पक्षधर नहीं हैं। उनके अनुसार यह शिक्षा के अवसरों के समान नहीं है तथा बालकों के विचारों में भिन्नता पैदा होती है। सामान्य कक्षाएँ अपंग बालकों में हीन भावना उत्पन्न करती है। कुछ ही समय पहले, मनोवैज्ञानिकों ने विचार दिया है कि समावेशी शिक्षा हमारे सामान्य विद्यालयों में दी जाये जिससे सभी बालकों को शिक्षा के समान अवसर मिलें। शिक्षाविद् भी इस प्रकार की शिक्षा के पक्षधर हैं तथा इसे निम्न कारणों से उचित बताते हैं—

1. सामान्य मानसिक विकास सम्भव है (Normal Mental Growth is Possible)—विशिष्ट शिक्षा में मानसिक जटिलता मुख्य है। अपंग बालक अपने आपको दूसरे बालकों की अपेक्षा तुच्छ तथा हीन समझते हैं जिसके कारण उनके साथ पृथकता से व्यवहार किया जा रहा है। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में, अपंगों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्रदान किया जाता है। प्रत्येक बालक सोचता है कि वह किसी भी प्रकार से किसी अन्य बच्चे से तुच्छ रहा है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा पद्धति बालकों की सामान्य मानसिक प्रगति को अग्रसर करती है।

2. सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है (Social Integration is Ensured)—अपंग बालकों में कुछ सामाजिक गुण बहुत संगत होते हैं। जब वे सामान्य बालकों के साथ शिक्षा पाते हैं। अपंग बालक अधिक संख्या में सामान्य बालकों का संग पाते हैं तथा एकीकरणता के कारण वे सामाजिक गुणों को अन्य बालकों के साथ ग्रहण करते हैं। उनमें सामाजिक, नैतिक गुण, प्रेम, सहानुभूति, आपसी सहयोग आदि गुणों का विकास होता है। विशिष्ट शिक्षा-व्यवस्था में छात्र केवल विशिष्ट ध्यान ही नहीं परन्तु विस्तार में शिक्षण तथा सामाजिक स्पर्धा की भावना विकसित होती है।

3. समावेशी शिक्षा कम खर्चीली है (Integrated Education is less Expensive)—निःसन्देह विशिष्ट शिक्षा अधिक महँगी तथा खर्चीली है। इसके अलावा विशिष्ट अध्यापक एवं शिक्षाविदों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम भी अधिक समय लेते हैं। दूसरे दृष्टिकोण से समावेशी शिक्षा कम खर्चीली तथा लाभदायक है। विशिष्ट शिक्षा संस्था को बनाने तथा शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने के लिये अन्य कई स्रोतों से भी सहायता लेनी पड़ती है; जैसे—प्रशिक्षित अध्यापक, विशेषज्ञ, चिकित्सक (Physiotherapist) आदि। अपंग बालक की सामान्य कक्षा में शिक्षा पर कम खर्च आता है।

4. समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकीकरण सम्भव है (Integration is Possible through Integrated Education)—विशिष्ट शिक्षण व्यवस्था की अपेक्षा समावेशी शिक्षण व्यवस्था में सामाजिक

विचार-विमर्श अधिक किये जाते हैं, अर्थात् उच्चारण अधिक है। अक्षम तथा सामान्य बालक में सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत एक प्राकृतिक वातावरण बनाया जाता है। इस वातावरण में अपने सहपाठियों से सीखना, स्वीकार करना तथा स्वयं को दूसरों द्वारा स्वीकार कराया जाना समावेशी शिक्षा द्वारा सम्भव है। सामान्य वातावरण में छात्र उपयुक्तता की भावना तथा भावनात्मक समायोजन का विकास होता है।

5. शैक्षिक एकीकरण सम्भव है (Academic Integration is Possible)—शैक्षिक योग्यता सामान्यता समावेशी शिक्षा के वातावरण द्वारा सम्भव है। शिक्षाविदों का ऐसा विश्वास है कि विशिष्ट शिक्षा संस्था एक बालक के प्रवेश के पश्चात् समान शैक्षिक योग्यता रखने वाले अक्षम बालक उनके गुणों को ग्रहण करता है। शिक्षाविदों को यह भी मालूम होता है कि विशिष्ट विद्यालयों में छात्र तथा अक्षम छात्र शिक्षा के पूर्ण ग्राही (ग्रहण करने वाले) नहीं होते। सामान्य विद्यालयों में बाधित छात्रों को प्रवेश दिलाने के कारण, वह ठीक प्रकार से शिक्षण ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं। एक प्रकार से कहा जा सकता है कि लचीले वातावरण तथा आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ समावेशी शिक्षा शैक्षिक एकीकरण लाती है।

6. समानता के सिद्धान्त का अनुपालन करना है (Principle of Equality is Maintained)—भारत में, सामान्य शिक्षा व्यापक रूप से विस्तार की संवैधानिक व्यवस्था की गई है और साथ-साथ शारीरिक रूप से बाधित बालकों के लिये शिक्षा को व्यापक रूप देना भी संविधान के अन्तर्गत दिया गया है। समावेशी शिक्षा के वातावरण के माध्यम से समानता के उद्देश्य की भी प्राप्ति की जानी चाहिये, जिससे कोई भी छात्र अपने आपको दूसरों की अपेक्षा हीन न समझे।